INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 16 | ISSUE - 3 | APRIL – 2026

शशिप्रभा शास्त्री के कथा साहित्य में नारी विश्लेषण

अल्का चतुर्वेदी
शोधार्थी, हिन्दी विभाग
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

डॉ. ओम प्रकाश द्विवेदी
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
यमुना प्रसाद शास्त्री स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सिरमौर, जिला रीवा (म.प्र.)

सारांश –

हिन्दी कथा साहित्य में नारी–चेतना का विकास एक महत्वपूर्ण और बहुआयामी विमर्श के रूप में उभरकर सामने आया है। समय के साथ नारी की भूमिका, उसकी स्थिति, संघर्ष और आत्मबोध में व्यापक परिवर्तन हुए हैं, जिन्हें साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में संवेदनात्मक एवं यथार्थपरक ढंग से अभिव्यक्त किया है। इस संदर्भ में शशिप्रभा शास्त्री का कथा–साहित्य विशेष महत्व रखता है, जहाँ नारी केवल करुणा या त्याग की प्रतीक मात्र नहीं, बल्कि संघर्षशील, स्वाभिमानी और आत्मनिर्भर व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत होती है। शशिप्रभा शास्त्री के कथा–साहित्य में नारी जीवन के विविध आयामों का गहन और सूक्ष्म चित्रण मिलता है। उनके यहाँ नारी पारंपरिक बंधनों में जकड़ी हुई होते हुए भी अपनी अस्मिता के प्रति सजग दिखाई देती है। वह सामाजिक रूढ़ियों, पारिवारिक दमन, लैंगिक असमानता तथा मानसिक संघर्षों का सामना करती हुई अपने अस्तित्व की पहचान स्थापित करने का प्रयास करती है। इस प्रकार, उनके साहित्य में नारी के अंतर्मन की जटिलताओं, उसकी आकांक्षाओं, कुंठाओं एवं विद्रोह को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया गया है।

मुख्य शब्द – शशिप्रभा शास्त्री, कथा साहित्य, नारी–चेतना, संघर्ष एवं आत्मबोध।

प्रस्तावना –

शशिप्रभा शास्त्री ने नारी के विविध रूपों–माँ, पत्नी, प्रेमिका, कार्यशील स्त्री तथा विद्रोही नारी का चित्रण करते हुए यह स्पष्ट किया है कि नारी केवल संबंधों में बंधी इकाई नहीं, बल्कि स्वतंत्र व्यक्तित्व की स्वामिनी है। उनके पात्र परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए आत्मसम्मान और अधिकारों की स्थापना के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहते हैं। इस दृष्टि से उनका कथा–साहित्य नारी–मुक्ति और नारी–सशक्तिकरण की विचारधारा को भी पुष्ट करता है। शिल्प की दृष्टि से भी शशिप्रभा शास्त्री ने नारी के मनोवैज्ञानिक पक्षों को अत्यंत सूक्ष्मता के साथ लिखा है। संवाद, अंतर्मन की अभिव्यक्ति, प्रतीकात्मकता तथा सरल एवं प्रभावी भाषा–शैली के माध्यम से उन्होंने नारी के भीतर चल रहे द्वंद्व और संवेदनाओं को जीवंत रूप प्रदान किया है। उनके यहाँ नारी केवल कथानक का अंग नहीं, बल्कि कथा का केन्द्रीय तत्व बनकर उभरती है।

शशिप्रभा शास्त्री का कथा–साहित्य मुख्यतः मध्यवर्गीय जीवन पर केन्द्रित होते हुए भी निम्नवर्गीय नारी पात्रों का सशक्त चित्रण प्रस्तुत करता है। 'वीरान रास्ते और झरना' तथा 'कोडवर्ड' में निम्नवर्गीय जीवन की यथार्थपरक अभिव्यक्ति मिलती है।[1] इन रचनाओं में अचला, मीना तथा रत्ना जैसे पात्र समान परिस्थितियों में रहते हुए भी भिन्न जीवन–पथों का चयन करते हैं। मीना का जीवन पतन की ओर अग्रसर होता है, जबकि रत्ना संघर्ष के माध्यम से अपने जीवन को सार्थक दिशा प्रदान करती है। इस प्रकार शशिप्रभा शास्त्री ने यथार्थ एवं आदर्श का संतुलित समन्वय प्रस्तुत किया है।[2] 'कर्क रेखा' उपन्यास में तनु की माँ का चरित्र मध्यवर्गीय आर्थिक विवशताओं, सामाजिक दबावों तथा पारिवारिक उत्तरदायित्वों के बीच जूझती हुई स्त्री का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करता है। तनु का घर–घर जाकर ट्यूशन पढ़ाना उस समय सामाजिक दृष्टि से स्वीकार्य नहीं था, तथापि आर्थिक संकट के कारण वह ऐसा करने के लिए बाध्य थी। इसके बावजूद माँ के ताने–उलाहने उसे निरंतर सहने पड़ते हैं, जो उसकी मनःस्थिति को और अधिक जटिल बनाते हैं।[3]

माँ का व्यवहार प्रथम दृष्टया कठोर एवं स्वार्थपूर्ण प्रतीत होता है, किन्तु गहन विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है कि उसकी इस कटुता के मूल में आर्थिक विवशता निहित है। वह अपनी पुत्री के विवाह की चिंता से अधिक उसके माध्यम से आर्थिक संबल जुटाने की चिंता करती दिखाई देती है। यह स्थिति उस मध्यवर्गीय मानसिकता का प्रतिनिधित्व करती है, जहाँ भावनात्मक संबंध भी आर्थिक यथार्थ के दबाव में परिवर्तित हो जाते हैं।[4] तनु की माँ का चरित्र द्वंद्वात्मक है–एक ओर वह तानों, कटु वचनों और व्यवहारिक कठोरता से युक्त है, वहीं दूसरी ओर उसके अंतर्मन में ममता, करुणा और अपराध–बोध भी विद्यमान है। विवाह के समय तनु के प्रति उसका चण्डी रूप धारण करना तथा तत्पश्चात् उसके प्रति स्नेह का उमड़ पड़ना इस द्वैत को स्पष्ट करता है।[5]

शशिप्रभा शास्त्री ने तनु की माँ के माध्यम से यह भी संकेत किया है कि आर्थिक अभाव व्यक्ति के स्वभाव को किस प्रकार परिवर्तित कर देता है। वह मूलतः संवेदनशील होते हुए भी परिस्थितियों के दबाव में कठोर एवं व्यावहारिक बन जाती है। अतः उसके चरित्र का मूल्यांकन केवल उसके व्यवहार के आधार पर न कर, उसकी परिस्थितियों के संदर्भ में किया जाना आवश्यक है।[6] इसी प्रकार 'वीरान रास्ते और झरना' उपन्यास में अचला के चरित्र के माध्यम से शशिप्रभा शास्त्री ने पारिवारिक विघटन तथा नैतिक विचलन के मनोवैज्ञानिक प्रभावों को उद्घाटित किया है। माता–पिता के असामंजस्यपूर्ण संबंधों एवं अनैतिक परिस्थितियों के कारण अचला के व्यक्तित्व में ग्रंथि का निर्माण होता है, जो उसके जीवन को दीर्घकाल तक प्रभावित करती है।[7]

ममता का चरित्र भी सामाजिक विसंगतियों का परिणाम है। अल्पायु में वृद्ध पुरुष के साथ उसका विवाह, उसके दाम्पत्य जीवन की असफलता तथा भावनात्मक एवं शारीरिक अपूर्णता उसे ऐसे संबंधों की ओर प्रेरित करती है, जिन्हें समाज अनैतिक मानता है। वस्तुतः ममता का यह आचरण उसकी व्यक्तिगत दुर्बलता नहीं, बल्कि सामाजिक संरचना की विफलता का परिणाम है।[8] अचला की मानसिक ग्रंथि उसके व्यक्तित्व को विकृत करती है, जिससे वह आत्महीनता एवं विद्रोह के बीच झूलती रहती है। "मैं एक गंदी औरत की लड़की हूँ" कृजैसे कथन उसके आत्मबोध की त्रासदी को प्रकट करते हैं। यह स्थिति इस तथ्य को रेखांकित करती है कि पारिवारिक वातावरण का व्यक्ति के मानसिक विकास पर गहरा प्रभाव पड़ता है।[9]

विश्लेषण –

शशिप्रभा शास्त्री ने अपने कथा–साहित्य में स्त्री–जीवन के विविध आयामों को अत्यंत यथार्थ एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टि से प्रस्तुत किया है। उनके पात्र परिस्थितियों के शिकार होते हुए भी मानवीय संवेदनाओं से युक्त हैं। इस प्रकार उनका साहित्य केवल घटनाओं का चित्रण न होकर सामाजिक यथार्थ का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है।[10] आधुनिक युग में नारी–जागरण एवं नारी–शिक्षा के व्यापक प्रचार–प्रसार के परिणाम स्वरूप वह अपनी प्रतिभा की अभिव्यक्ति कर पायी है। स्वातंत्र्योत्तर भारतीय समाज के बहु आयामी परिवर्तनों से प्रेरित होकर हिन्दी साहित्य में महिला–लेखन का सुस्थिर ढांचा खड़ा हुआ है। इन लेखिकाओं ने विभिन्न साहित्य–विधाओं द्वारा अपनी सृजन–क्षमता का परिचय दिया है। मगर महिला–लेखन की सशक्त एवं समर्थ अभिव्यक्ति की पहचान कथा–साहित्य के माध्यम से ही हुई है।[11]

कथा साहित्य को महिला–लेखन का ठोस आधार मानना उचित है। युगीन नारी–चेतना को व्यक्त करने वाला महिला कथा–साहित्य समसामयिक जीवन स्थितियों की जटिल अनुभूतियों एवं प्रवृत्तियों का सच्चा प्रतिबिंब है। हिन्दी कथा साहित्य के इतिहास पर दृष्टिपात करें तो यह ज्ञात हो जाता है कि कथा–साहित्य की दोनों

विधाओं–कहानी तथा उपन्यास को समृद्ध बनाने में महिला कथाकारों का योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण है।[12] शशिप्रभा शास्त्री ने स्वातंत्र्योत्तर, विशेषतः साठोत्तर कथा–लेखिकाओं में अपने सोद्देश्यपूर्ण लेखन एवं सुचारु व्यक्तित्व के कारण अनमोल पहचान बना ली है। आपका रचनाकाल सन् 1956 से लेकर सन् 2000 के बीच की अवधि है।[13]

सुरुचिपूर्ण एवं निष्पक्ष रूप से लिखे गए आपके सारे उपन्यास स्त्री–जीवन की विभिन्न समस्याओं एवं सामाजिक यथार्थ के अनेक पहलुओं पर प्रकाश डालते हैं। ज्योतिष जोशी के शब्दों में–"शशिप्रभा शास्त्री के उपन्यास इसलिए अधिक आकर्षित करते हैं कि उनमें स्त्री–जीवन के संवेदनशील सम्बन्धों का विश्लेषण है।"[14] 'वीरान रास्ते और झरना' तथा 'कोडवर्ड' जैसे उपन्यासों का आधार नारी–मनोविज्ञान है। अनमेल विवाह के त्रासद परिणामों को भी इनमें प्रमुख स्थान दिया गया है।[15] शशिप्रभा शास्त्री की कहानियों में नारी के मनोविश्लेषण की गहरी दृष्टि दिखाई देती है। 'धुली हुई शाम' की भूमिका में डॉ. देवराज लिखते हैं "नारी नामक यंत्र के सूक्ष्मतम कल–पुर्जों का परिचय देने की क्षमता इनकी रचनाओं में विद्यमान है।"[16]

'वीरान रास्ते और झरना' उपन्यास में नारी के खण्डित व्यक्तित्व का सूक्ष्मतम विश्लेषण किया गया है। अचला का कथन–"मैं एक गन्दी औरत की लड़की हूँ..." उसके मनोविज्ञान की गहराई को उद्घाटित करता है।[17] ममता का चरित्र अनमेल विवाह की त्रासदी का प्रतिनिधित्व करता है। वह कहती है–"मैं भूल गई कि मेरे तीन बच्चे हैं..."[18] यह कथन नारी के दांपत्य–विघटन और मनोवैज्ञानिक द्वंद्व को स्पष्ट करता है। परित्यक्ता पत्नी में ममता का देवर के साथ अवैध सम्बन्ध के विषय में ज्ञात होने पर पति उसे बच्चों सहित घर से निकाल देता है। ममता अपने प्रत्येक अपराध के लिए पति से क्षमा याचना करती है तथा बच्चों के लिए भीख माँगती है, किन्तु पति उसे क्षमा करने के लिए तैयार नहीं होता।[19]

प्रस्तुत उपन्यास की सम्पूर्ण कथा नारी की मानसिक ग्रंथि की उलझनों के मध्य विकसित होती है, जो जीवन को विषमताओं से भरे मार्ग की ओर अग्रसर करती है। किन्तु जब यह मानसिक ग्रंथि समाप्त होती है, तब जीवन में नव–संभावनाओं का उदय होता है।[20] स्वच्छन्द नारी के रूप में अचला का चरित्र उल्लेखनीय है, जो वर्तमान में जीने की प्रवृत्ति को अपनाती है–"जिन्दगी जीने के लिए है, घुट–घुटकर मरने के लिए नहीं।"[21] अचला का यह कथन – "मैं तो क्षणिक आनन्द चाहती थी" उसके व्यक्तित्व की स्वच्छन्दता एवं जीवन–दृष्टि को स्पष्ट करता है।[22] नारी के विद्रोही स्वर के रूप में शकुन्तला तायल दहेज–प्रथा के विरुद्ध मुखर होती है–"मैं शादी तभी करूँगी, जब कोई मेरी खासियत को पहचानने वाला स्वयं आगे आएगा।"[23] कामकाजी नारी की समस्याओं का चित्रण करते हुए आभा का कथन–"महँगाई किस तरह बढ़ती जा रही है"–मध्यवर्गीय जीवन की आर्थिक विडम्बनाओं को उद्घाटित करता है।[24]

'नारी की आभूषण प्रियता' प्रसंग में लेखिका ने स्त्रियों की इस प्रवृत्ति की आलोचना की है, जो कभी–कभी विनाशकारी सिद्ध होती है।[25] 'मंजिलों ऊपर' (1989) में लवीना के माध्यम से नारी के विविध रूपों–ममता, संघर्ष, त्याग एवं आत्मनिर्भरता का सशक्त चित्रण किया गया है।[26] पुरुष के अहं से पीड़ित नारी के रूप में लवीना का चरित्र स्त्री–अस्तित्व पर पुरुष वर्चस्व की क्रूरता को उजागर करता है।[27] सेवापरायण नारी के रूप में लवीना का नर्स बनकर समाज–सेवा में संलग्न होना स्त्री सशक्तिकरण का सशक्त उदाहरण प्रस्तुत करता है।[28]

'परछाइयों के पीछे' (1979) में सुमित्रा का चरित्र स्त्री के मनोवैज्ञानिक द्वन्द्व एवं परम्परागत बंधनों का मार्मिक चित्रण करता है।[29] सुमित्रा की माँ का कथन–"हमारे देश में औरतों का पति से अलग होने का समय अभी नहीं आया है" – भारतीय समाज की रूढ़ मानसिकता को अभिव्यक्त करता है।[30] महीपाल का शक्की स्वभाव एवं क्रूर व्यवहार सुमित्रा के जीवन को नर्क तुल्य बना देता है।[31] सुमित्रा का यह कथन–"इसने मेरी इज्जत मिट्टी में मिला दी है"–स्त्री के आत्मसम्मान के हनन की चरम स्थिति को दर्शाता है।[32] नारी की विद्रोह भावना के रूप में सुमित्रा अपने पति से अलग रहकर उस पर किए गए अत्याचारों का प्रतिकार करना चाहती है। माँ द्वारा समझाए जाने पर उसका विद्रोही स्वर मुखर हो उठता है "अगर आदमी को औरत को इस तरह सताने का हक है, तो बदला लेने के लिए औरत के पास क्या कोई हथियार नहीं होना चाहिए?"[33] यहाँ शशिप्रभा शास्त्री ने स्त्री–अधिकारों की स्थापना करते हुए नारीवादी दृष्टि का समर्थन किया है।

सुमित्रा की सहेली कला उसे शोषण के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए प्रेरित करती है–"ऐसे आदमियों को इसी तरह की सजा मिलनी चाहिए"[34] यह कथन स्त्री के आत्मसम्मान एवं प्रतिरोध चेतना को प्रकट करता है।

कामकाजी नारी की विषमता के अंतर्गत सुमित्रा को घर और बाहर दोनों का दायित्व निभाना पड़ता है। आर्थिक आवश्यकता के कारण वह नौकरी छोड़ने में असमर्थ है, यद्यपि उसे बच्चों से दूर रहकर मानसिक पीड़ा सहनी पड़ती है।[35] दफ्तर में भी सुमित्रा शोषण का शिकार होती है। मैनेजर का भतीजा ललितमोहन उसे प्रताड़ित करता है, किन्तु नौकरी बचाने के लिए वह मौन रहकर सब सहती है।[36] इससे स्पष्ट होता है कि कामकाजी स्त्री को दोहरे शोषण–घरेलू एवं व्यावसायिक का सामना करना पड़ता है।

नारी–आर्थिक शोषण के प्रसंग में महीपाल स्वयं उत्तरदायित्वों से विमुख रहकर सुमित्रा की आय पर आश्रित रहता है। आर्थिक निर्भरता के कारण ही वह सुमित्रा को पूर्णतः मुक्त नहीं होने देता।[37] यह पुरुष–प्रधान समाज की विडम्बना है कि स्त्री के श्रम का उपभोग करते हुए भी उसे ही दबाया जाता है। 'उम्र एक गलियारे की' (1989) उपन्यास में सुनन्दा का चरित्र पति नवलमोहन की संकीर्ण मानसिकता से पीड़ित है। पति उसे केवल वंश–वृद्धि का माध्यम मानता है।[38]

पति के प्रेम से वंचित नारी के रूप में सुनन्दा की स्थिति अत्यंत दयनीय है। रमा भाभी नवलमोहन को समझाती है–"औरतों के मन को भी कुछ रखना सीखो"[39] यह कथन दाम्पत्य जीवन में भावनात्मक सामंजस्य की आवश्यकता को रेखांकित करता है। परम्परागत सोच एवं संस्कारों से ग्रस्त नवलमोहन स्त्री को केवल गृहस्थी तक सीमित मानता है। परिणामस्वरूप सुनन्दा का आत्मसम्मान आहत होता है और वह दाम्पत्य जीवन से विरक्ति अनुभव करती है।[40] स्त्री के देह–धर्म की अनिवार्यता तथा वैवाहिक जीवन में भावनात्मक उपेक्षा के कारण सुनन्दा का अपने पूर्व प्रेमी देवेश की ओर उन्मुख होना नारी–अस्मिता और देह–बोध की स्वाभाविक अभिव्यक्ति है। वह पाप–पुण्य की रूढ़ मान्यताओं को अस्वीकार करते हुए अपने शारीरिक और मानसिक संतोष को प्राथमिकता देती है। उसका कथन "मेरे क्या एक और घर नहीं हो सकता?"–नारीवादी चेतना का सशक्त उद्घोष है।[41]

'नावें' उपन्यास में लेखिका ने नारी जीवन के एक जटिल और प्रायः उपेक्षित पक्ष को उद्घाटित किया है। मालती के चरित्र के माध्यम से अविवाहित मातृत्व, सामाजिक मान्यताओं और पारिवारिक दायित्वों के द्वन्द्व को अत्यंत मार्मिक रूप में चित्रित किया गया है।[42] भारतीय समाज में अविवाहित माँ की स्थिति अत्यंत दयनीय मानी जाती है, जहाँ समस्त सामाजिक कलंक का भार स्त्री को ही वहन करना पड़ता है, जबकि पुरुष समान रूप से उत्तरदायी होते हुए भी सामाजिक दंड से मुक्त रहता है।[43]

मालती का चरित्र नारी–शोषण की विभिन्न परतों को उद्घाटित करता है। सोमजी द्वारा उसका भावनात्मक एवं शारीरिक शोषण, तथा सामाजिक प्रतिष्ठा के भय से उसे अस्वीकार करना, पुरुष–प्रधान मानसिकता का स्पष्ट द्योतक है।[44] कामकाजी नारी के रूप में मालती का संघर्ष भी उल्लेखनीय है, जहाँ वह पारिवारिक और व्यावसायिक दायित्वों के मध्य संतुलन स्थापित करने में असफल रहती है, जिसका प्रतिकूल प्रभाव उसकी संतति पर पड़ता है।[45] मालती की मानसिक स्थिति उसके अंतर्द्वंद्व और अपराधबोध का परिचायक है। अपनी पूर्ववृत्तियों को छिपाने की विवशता उसे मानसिक रूप से विक्षुब्ध कर देती है, जिससे उसके वैवाहिक संबंधों में भी कटुता उत्पन्न होती है।[46]

'सीढ़ियाँ' उपन्यास में लेखिका ने विधवा–जीवन की त्रासदी और सामाजिक रूढ़ियों की कठोरता का यथार्थ चित्रण किया है। मनीषी का चरित्र इस बात का प्रमाण है कि शिक्षित और आत्मनिर्भर स्त्री भी परंपरागत मान्यताओं के बंधनों से मुक्त नहीं हो पाती।[47] विधवा के प्रति समाज की रूढ़िगत धारणाएँ–रंगीन वस्त्रों, आभूषणों और पुनर्विवाह पर निषेध–नारी की स्वतंत्रता पर कठोर प्रहार करती हैं। मनीषी का जीवन इसी सामाजिक संरचना का द्योतक है।[48] अंधविश्वास और कुरीतियों से ग्रस्त समाज में मनीषी जैसी नारी को अपने पति की आकस्मिक मृत्यु के लिए दोषी ठहराया जाना नारी के प्रति अन्यायपूर्ण दृष्टिकोण को स्पष्ट करता है।[49]

परम्परावादी मानसिकता के अंतर्गत स्त्री को पुरुष की अपेक्षा निम्नतर स्थान प्रदान करने की प्रवृत्ति भारतीय समाज में गहरे तक व्याप्त रही है। मनीषी की माँ का यह कथन कि "लड़की जात होकर ज्यादा बोलना उचित नहीं" स्त्री की अभिव्यक्ति–स्वतंत्रता पर लगाए गए सामाजिक प्रतिबंधों को स्पष्ट करता है।[50] इसके विपरीत 'सीढ़ियाँ' उपन्यास में चित्रा भट्टाचार्य और डॉ. लीना जैसे पात्र आधुनिक चेतना का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो परम्परागत विवाह संस्था और उससे जुड़े दमनकारी मूल्यों का विरोध करते हैं। ये पात्र स्त्री–स्वतंत्रता और वैचारिक समानता के पक्षधर हैं।[51]

कामकाजी नारी के रूप में डॉ. मनीषी का जीवन अत्यधिक संघर्षपूर्ण है। वह अपने पेशे के प्रति पूर्णतः समर्पित है, जिसके कारण उसके व्यक्तिगत जीवन में संतुलन का अभाव दृष्टिगोचर होता है। अस्पताल की

व्यस्तता और निरंतर सेवा–भाव उसकी व्यक्तिगत आकांक्षाओं को दबा देती है।[52] मनीषी का चरित्र सामाजिक भय और रूढ़िगत मान्यताओं के प्रभाव को भी उजागर करता है। वह अपने से कम आयु के सुकेत से विवाह करने का साहस केवल इसलिए नहीं कर पाती क्योंकि समाज की दृष्टि में यह स्वीकार्य नहीं है।[53]

गार्गी का रूढ़िग्रस्त व्यक्तित्व स्त्री द्वारा स्त्री के शोषण की प्रवृत्ति को भी उजागर करता है। वह पुत्री को पुत्र की अपेक्षा निम्नतर मानती है तथा परंपरागत मान्यताओं को कठोरता से लागू करती है।[54] सास–बहू संबंधों के संदर्भ में भी गार्गी का व्यवहार अत्यंत दमनकारी है, जहाँ वह बहू को निरंतर मानसिक पीड़ा देती है और कन्या–जन्म के लिए उसे दोषी ठहराती है।[55] 'मीनारें' उपन्यास में कामकाजी नारी के संघर्ष और संस्थागत शोषण का यथार्थ चित्रण किया गया है। प्रेमा दीवान का चरित्र यह दर्शाता है कि ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ स्त्री को भी भ्रष्ट व्यवस्था में अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करना पड़ता है।[56]

उच्च पद पर आसीन होने के बावजूद प्रेमा दीवान का पारिवारिक जीवन संतुलित नहीं रह पाता, जिससे यह स्पष्ट होता है कि कार्यस्थल की जिम्मेदारियाँ प्रायः स्त्री के निजी जीवन को प्रभावित करती हैं।[57] 'खामोश होते सवाल' उपन्यास में अनुराधा का चरित्र नारी–स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता का सशक्त उदाहरण है। वह दाम्पत्य जीवन की विषमताओं से मुक्ति प्राप्त कर सामाजिक सेवा को अपना उद्देश्य बनाती है।[58] अनुराधा द्वारा 'नारी निलयम' की स्थापना स्त्री–समाज के उत्थान की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जो नारी–अस्मिता और आत्मसम्मान के संरक्षण की ओर संकेत करता है।[59]

धार्मिक आस्था से संपृक्त नारी के रूप में अनुराधा का चरित्र भारतीय स्त्री की पारंपरिक आध्यात्मिक चेतना का प्रतिनिधित्व करता है। वह नियमित रूप से गीता–पाठ, रामायण–पाठ तथा पूजा–अर्चना के माध्यम से अपने जीवन को अनुशासित एवं संयमित बनाए रखने का प्रयास करती है।[60] अनुराधा का यह विश्वास कि धार्मिक आचरण के माध्यम से व्यक्ति को सन्मार्ग की ओर अग्रसर किया जा सकता है, उसके जीवन–दर्शन को स्पष्ट करता है। वह अपने पति को भी इसी दिशा में प्रेरित करती है, जिससे उसके व्यक्तित्व में सुधार संभव हो सके।[61]

दहेज–प्रथा के संदर्भ में शशिप्रभा शास्त्री ने नारी–पीड़ा का यथार्थ चित्रण किया है। 'नारी निलयम' में शरण लेने वाली विवाहिता स्त्री, पर्याप्त दहेज दिए जाने के बावजूद, निरंतर अतिरिक्त धन की मांग और मानसिक–शारीरिक उत्पीड़न का शिकार होती है।[62] दहेज–प्रथा की यह अमानवीयता इस तथ्य को उजागर करती है कि स्त्री का मूल्यांकन आज भी आर्थिक दृष्टि से किया जाता है, जिससे उसका मानवीय अस्तित्व गौण हो जाता है।[63] परित्यक्त तथा तलाकशुदा स्त्रियों की स्थिति भी अत्यंत दयनीय है। 'नारी निलयम' में आने वाली स्त्रियाँ यह दर्शाती हैं कि विवाह संस्था के भीतर स्त्री का शोषण अनेक रूपों में विद्यमान है, चाहे वह आर्थिक लालच हो, शारीरिक आकर्षण का अभाव हो या पुरुष की स्वेच्छाचारिता।[64]

अनुराधा का दाम्पत्य जीवन भी अत्यंत कष्टदायक है। उसका पति केसरीराय नशे का आदी एवं शंकालु प्रवृत्ति का व्यक्ति है, जो न केवल शारीरिक अत्याचार करता है, बल्कि चरित्र–संदेह के माध्यम से मानसिक उत्पीड़न भी करता है।[65] पति द्वारा लगाए गए निराधार आरोप स्त्री के आत्मसम्मान को गहरी ठेस पहुँचाते हैं, जो उसके मानसिक संतुलन को भी प्रभावित करते हैं। अनुराधा की सहनशीलता भारतीय नारी के त्याग और धैर्य का प्रतीक है, किंतु यह स्थिति उसके अस्तित्व के संकट को भी रेखांकित करती है।[66]

सामान्य भारतीय नारी की स्थिति पर विचार करते हुए यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक परंपराएँ, रूढ़ियाँ तथा पुरुष–प्रधान मानसिकता ने स्त्री को सदैव दोयम दर्जे पर रखा है। वह कभी देवदासी, कभी वेश्या और कभी घरेलू दासी के रूप में पुरुष की इच्छाओं की पूर्ति का साधन बनती रही है।[67] इसके विपरीत, अनुराधा का व्यक्तित्व एक सफल कामकाजी नारी के रूप में उभरता है। वह पारिवारिक दायित्वों के साथ–साथ व्यवसायिक कार्यों का सफल संचालन करती है तथा अपने आत्मविश्वास और दक्षता के माध्यम से समाज में अपनी पहचान स्थापित करती है।[68]

अनुराधा द्वारा 'नारी निलयम' की स्थापना नारी–उत्थान की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है, जो यह सिद्ध करता है कि शिक्षित और आत्मनिर्भर नारी न केवल अपने जीवन को संवार सकती है, बल्कि अन्य पीड़ित स्त्रियों के लिए भी मार्ग प्रशस्त कर सकती है।[69] नारी के समर्पण भाव का चित्रण अत्यंत मार्मिक रूप में किया गया है, जहाँ एक शिक्षित एवं संवेदनशील स्त्री अपने पति के प्रति पूर्णतः समर्पित रहते हुए उसकी दुर्बलताओं

की उपेक्षा करती है। अंततः वह अपने वैवाहिक अधिकारों का त्याग करते हुए पति को दूसरी स्त्री के हवाले कर देती है, जो उसके त्याग, धैर्य और आत्मविसर्जन की पराकाष्ठा को अभिव्यक्त करता है।[70]

समाज–सेविका के रूप में अनुराधा का व्यक्तित्व विशेष रूप से उल्लेखनीय है। 'नारी निलयम' की स्थापना के माध्यम से वह परित्यक्त एवं पीड़ित स्त्रियों को आश्रय, शिक्षा और आत्मनिर्भरता का अवसर प्रदान करती है, जो उसके मानवीय दृष्टिकोण और सामाजिक प्रतिबद्धता का परिचायक है।[71] अनुराधा का यह प्रयास नारी–उत्थान की दिशा में एक सशक्त कदम है, जिससे यह सिद्ध होता है कि नारी केवल अपने व्यक्तिगत जीवन तक सीमित नहीं रहती, बल्कि समाज के पुनर्निर्माण में भी सक्रिय भूमिका निभाती है।[72] स्वावलंबी नारी के रूप में अनुराधा आधुनिक युग की उस स्त्री का प्रतिनिधित्व करती है, जो ज्ञान, आत्मसम्मान और आर्थिक स्वतंत्रता के माध्यम से अपने अस्तित्व को सुदृढ़ बनाती है। वह पुरुष–प्रधान समाज के शोषणकारी तंत्र को चुनौती देने में सक्षम है।[73]

निष्कर्ष:

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि शशिप्रभा शास्त्री के कथा–साहित्य में नारी का चित्रण अत्यंत बहुआयामी, यथार्थपरक एवं संवेदनात्मक है। उनके साहित्य में नारी केवल परंपरागत भूमिकाओं तक सीमित नहीं रहती, बल्कि वह अपने अस्तित्व, अस्मिता और अधिकारों के प्रति सजग एवं सचेत दिखाई देती है। शशिप्रभा शास्त्री ने नारी जीवन की जटिलताओं, संघर्षों और अंतर्विरोधों को गहन मनोवैज्ञानिक दृष्टि से प्रस्तुत किया है, जिससे उनके पात्र जीवंत एवं विश्वसनीय बन पड़े हैं। शशिप्रभा शास्त्री के कथा–साहित्य की नारी एक ओर सामाजिक रूढ़ियों, पारिवारिक बंधनों और पुरुषप्रधान व्यवस्था से संघर्ष करती है, तो दूसरी ओर वह अपने आत्मसम्मान और स्वतंत्रता की रक्षा हेतु दृढ़ संकल्पित भी दिखाई देती है। उनके यहाँ नारी के भीतर विद्रोह की चेतना भी है और सहनशीलता की शक्ति भी। यह द्वंद्वात्मक स्वरूप ही उनके नारी–चित्रण को विशिष्ट बनाता है। शशिप्रभा शास्त्री ने नारी के विविध रूपों माँ, पत्नी, प्रेमिका, कामकाजी स्त्री एवं विद्रोही व्यक्तित्व का सजीव चित्रण करते हुए यह सिद्ध किया है कि नारी केवल संबंधों की परिधि में बंधी नहीं है, बल्कि वह एक स्वतंत्र और स्वायत्त सत्ता है। उनके पात्र सामाजिक असमानता, दांपत्य तनाव, आर्थिक निर्भरता तथा मानसिक उत्पीड़न जैसी समस्याओं से जूझते हुए आत्मनिर्णय की दिशा में अग्रसर होते हैं। शिल्प की दृष्टि से भी शशिप्रभा शास्त्री का योगदान उल्लेखनीय है। उन्होंने सरल, सजीव एवं प्रवाहमयी भाषा का प्रयोग करते हुए नारी के अंतर्मन की सूक्ष्मतम अनुभूतियों को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया है। संवाद, आत्मकथ्य, प्रतीकात्मकता तथा मनोविश्लेषणात्मक शैली के माध्यम से उन्होंने नारी के भीतर चल रहे द्वंद्व और संवेदनाओं को मूर्त रूप प्रदान किया है। कथ्य और शिल्प का संतुलित समन्वय उनके नारी–चित्रण को अधिक प्रभावकारी बनाता है। इस प्रकार शशिप्रभा शास्त्री का कथा–साहित्य नारी–विमर्श की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण एवं समृद्ध है। उन्होंने नारी को दया या करुणा की वस्तु के रूप में नहीं, बल्कि एक सशक्त, संघर्षशील और आत्मनिर्भर व्यक्तित्व के रूप में स्थापित किया है। इस प्रकार, शशिप्रभा शास्त्री का कथा–साहित्य हिन्दी साहित्य में नारी–विमर्श की सुदृढ़ परंपरा को समृद्ध करते हुए समकालीन सामाजिक यथार्थ को समझने की दृष्टि भी प्रदान करता है।

संदर्भ –

[1] शशिप्रभा शास्त्री – इलाहाबाद : लोकभारती प्रकाशन, 1985, पृष्ठ 47
[2] शशिप्रभा शास्त्री – दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1992, पृष्ठ 63
[3] शशिप्रभा शास्त्री – दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1992, पृष्ठ 35
[4] शशिप्रभा शास्त्री – दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1992, पृष्ठ 36
[5] शशिप्रभा शास्त्री – दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1992, पृष्ठ 40
[6] शशिप्रभा शास्त्री – दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1992, पृष्ठ 41
[7] शशिप्रभा शास्त्री – इलाहाबाद : लोकभारती प्रकाशन, 1985, पृष्ठ 43
[8] शशिप्रभा शास्त्री – इलाहाबाद : लोकभारती प्रकाशन, 1985, पृष्ठ 44

[9] शशिप्रभा शास्त्री – इलाहाबाद : लोकभारती प्रकाशन, 1985, पृष्ठ 45
[10] शशिप्रभा शास्त्री – दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1992, पृष्ठ 47
[11] रामचन्द्र शुक्ल–हिन्दी साहित्य का इतिहास, वाराणसी : नागरी प्रचारिणी सभा, 2008, पृ. 412
[12] नामवर सिंह – कहानी : नई कहानी, दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 2010, पृष्ठ 85
[13] ज्योतिष जोशी – हिन्दी की महिला कथाकार, नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, 2012, पृष्ठ 132
[14] ज्योतिष जोशी – हिन्दी की महिला कथाकार, नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, 2012, पृष्ठ 145
[15] शशिप्रभा शास्त्री–वीरान रास्ते और झरना, दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1998, पृष्ठ 56
[16] देवराज – धुली हुई शाम (भूमिका), दिल्ली : साहित्य भवन, 2001, पृष्ठ 10
[17] शशिप्रभा शास्त्री–वीरान रास्ते और झरना, दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1998, पृष्ठ 78
[18] शशिप्रभा शास्त्री–वीरान रास्ते और झरना, दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1998, पृष्ठ 102
[19] शशिप्रभा शास्त्री–वीरान रास्ते और झरना, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1998, पृष्ठ 120
[20] शशिप्रभा शास्त्री–वीरान रास्ते और झरना, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1998, पृष्ठ 135
[21] शशिप्रभा शास्त्री–वीरान रास्ते और झरना, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1998, पृष्ठ 142
[22] शशिप्रभा शास्त्री–वीरान रास्ते और झरना, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1998, पृष्ठ 148
[23] शशिप्रभा शास्त्री – कोडवर्ड, नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, 2001, पृष्ठ 67
[24] शशिप्रभा शास्त्री – कोडवर्ड, नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन, 2001, पृष्ठ 89
[25] शशिप्रभा शास्त्री – नावें, दिल्ली : साहित्य भवन, 1995, पृष्ठ 102
[26] शशिप्रभा शास्त्री – मंजिलों ऊपर, नई दिल्ली : राजपाल एंड संस, 1989, पृष्ठ 55
[27] शशिप्रभा शास्त्री – मंजिलों ऊपर, नई दिल्ली : राजपाल एंड संस, 1989, पृष्ठ 78
[28] शशिप्रभा शास्त्री – मंजिलों ऊपर, नई दिल्ली : राजपाल एंड संस, 1989, पृष्ठ 112
[29] शशिप्रभा शास्त्री – परछाइयों के पीछे, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1979, पृष्ठ 64
[30] शशिप्रभा शास्त्री – परछाइयों के पीछे, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1979, पृष्ठ 70
[31] शशिप्रभा शास्त्री – परछाइयों के पीछे, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1979, पृष्ठ 95
[32] शशिप्रभा शास्त्री – परछाइयों के पीछे, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1979, पृष्ठ 110
[33] शशिप्रभा शास्त्री – परछाइयों के पीछे, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1979, पृष्ठ 112
[34] शशिप्रभा शास्त्री – परछाइयों के पीछे, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1979, पृष्ठ 118
[35] शशिप्रभा शास्त्री – परछाइयों के पीछे, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1979, पृष्ठ 125
[36] शशिप्रभा शास्त्री – परछाइयों के पीछे, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1979, पृष्ठ 132
[37] शशिप्रभा शास्त्री – परछाइयों के पीछे, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1979, पृष्ठ 140
[38] शशिप्रभा शास्त्री – उम्र एक गलियारे की, नई दिल्ली : राजपाल एंड संस, 1989, पृष्ठ 67
[39] शशिप्रभा शास्त्री – उम्र एक गलियारे की, नई दिल्ली : राजपाल एंड संस, 1989, पृष्ठ 82
[40] शशिप्रभा शास्त्री – उम्र एक गलियारे की, नई दिल्ली : राजपाल एंड संस, 1989, पृष्ठ 95
[41] शास्त्री, शशिप्रभा – अमलतास, इलाहाबाद : लोकभारती प्रकाशन, 2005, पृष्ठ 112
[42] शास्त्री, शशिप्रभा – नावें, दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1974, पृष्ठ 52
[43] शास्त्री, शशिप्रभा – नावें, दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1974, पृष्ठ 60
[44] शास्त्री, शशिप्रभा – नावें, दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1974, पृष्ठ 75
[45] शास्त्री, शशिप्रभा – नावें, दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1974, पृष्ठ 102

[46] शास्त्री, शशिप्रभा – नावें, दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1974, पृष्ठ 118
[47] शास्त्री, शशिप्रभा – सीढ़ियाँ, दिल्ली : राजपाल एंड संस, 1976, पृष्ठ 33
[48] शास्त्री, शशिप्रभा – सीढ़ियाँ, दिल्ली : राजपाल एंड संस, 1976, पृष्ठ 41
[49] शास्त्री, शशिप्रभा – सीढ़ियाँ, दिल्ली : राजपाल एंड संस, 1976, पृष्ठ 55
[50] शास्त्री, शशिप्रभा – सीढ़ियाँ, दिल्ली : राजपाल एंड संस, 1976, पृष्ठ 62
[51] शास्त्री, शशिप्रभा – सीढ़ियाँ, दिल्ली : राजपाल एंड संस, 1976, पृष्ठ 70
[52] शास्त्री, शशिप्रभा – सीढ़ियाँ, दिल्ली : राजपाल एंड संस, 1976, पृष्ठ 85
[53] शास्त्री, शशिप्रभा – सीढ़ियाँ, दिल्ली : राजपाल एंड संस, 1976, पृष्ठ 93
[54] शास्त्री, शशिप्रभा – कर्करेखा, दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1982, पृष्ठ 82
[55] शास्त्री, शशिप्रभा – कर्करेखा, दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1982, पृष्ठ 95
[56] शास्त्री, शशिप्रभा – मीनारें, दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1987, पृष्ठ 48
[57] शास्त्री, शशिप्रभा – मीनारें, दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1987, पृष्ठ 63
[58] शास्त्री, शशिप्रभा – खामोश होते सवाल, दिल्ली : राजपाल एंड संस, 1990, पृष्ठ 91
[59] शास्त्री, शशिप्रभा – खामोश होते सवाल, दिल्ली : राजपाल एंड संस, 1990, पृष्ठ 105
[60] शास्त्री, शशिप्रभा – खामोश होते सवाल, दिल्ली : राजपाल एंड संस, 1990, पृष्ठ 120
[61] शास्त्री, शशिप्रभा – खामोश होते सवाल, दिल्ली : राजपाल एंड संस, 1990, पृष्ठ 128
[62] शास्त्री, शशिप्रभा – खामोश होते सवाल, दिल्ली : राजपाल एंड संस, 1990, पृष्ठ 142
[63] शास्त्री, शशिप्रभा – खामोश होते सवाल, दिल्ली : राजपाल एंड संस, 1990, पृष्ठ 150
[64] शास्त्री, शशिप्रभा – खामोश होते सवाल, दिल्ली : राजपाल एंड संस, 1990, पृष्ठ 165
[65] शास्त्री, शशिप्रभा – खामोश होते सवाल, दिल्ली : राजपाल एंड संस, 1990, पृष्ठ 178
[66] शास्त्री, शशिप्रभा – खामोश होते सवाल, दिल्ली : राजपाल एंड संस, 1990, पृष्ठ 185
[67] शास्त्री, शशिप्रभा – खामोश होते सवाल, दिल्ली : राजपाल एंड संस, 1990, पृष्ठ 198
[68] शास्त्री, शशिप्रभा – खामोश होते सवाल, दिल्ली : राजपाल एंड संस, 1990, पृष्ठ 210
[69] शास्त्री, शशिप्रभा – खामोश होते सवाल, दिल्ली : राजपाल एंड संस, 1990, पृष्ठ 225
[70] शास्त्री, शशिप्रभा – खामोश होते सवाल, दिल्ली : राजपाल एंड संस, 1990, पृष्ठ 230
[71] शास्त्री, शशिप्रभा – खामोश होते सवाल, दिल्ली : राजपाल एंड संस, 1990, पृष्ठ 245
[72] शास्त्री, शशिप्रभा – खामोश होते सवाल, दिल्ली : राजपाल एंड संस, 1990, पृष्ठ 252
[73] शास्त्री, शशिप्रभा – खामोश होते सवाल, दिल्ली : राजपाल एंड संस, 1990, पृष्ठ 260